बिहार का प्राचीन इतिहास: पाषाण काल से मौर्य पूर्व राजवंश तक

पाषाण युग स्थल

- पुरापाषाणी स्थलों (पेलियोलिथिक साइट्स) की खोज मुंगेर और नालंदा से की गई है।
- मध्यपाषाण स्थलों (मेसोलिथिक साइट्स) की खोज हजारीबाग, रांची, सिंहभूम तथा संथल परगना (सभी झारखंड में) से की गई है।
- नव पाषाण (निओलिथिक) (2500 - 1500 ईसा पूर्व) कलाकृतियों की खोज चिरांद (सरण) और चेचर (वैशाली) से की गई है।
- चिरांद (सरण), चेचर (वैशाली), चंपा (भागलपुर) तथा तारदीह (गया) से ताम्रपाषाण युग की कुछ वस्तुएं प्राप्त हुईं हैं।

महाजनपद

- वैदिक युग में बाद में कई छोटे राज्यों का उदय हुआ। 16 साम्राज्यों तथा गणराज्यों को महाजनपद के रूप में जाना जाता है, जो भारत - गंगा मैदानों में फैले हुए हैं। वे निम्नानुसार हैं:

1. कासी	2. कम्बोज
3. कोसाला	4. गांधार
5. अंग	6. अवंती
7. मगध	8. अस्साका
9. वज्जि (वृजि)	10. सुरसेन
11. मल्ला	12. मत्स्य
13. चेदि	14. पांचाल
15. वत्स (वामसा)	16. कुरू

- तीन महाजनपद नामत: मगध, अंग तथा वज्जि बिहार में थे।

अंग राज्य

- इसका उल्लेख पहली बार अथर्ववेद में किया गया है।

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- वर्तमान में इसमें खगरिया, भागलपुर तथा मुंगेर शामिल हैं।
- यह मगध साम्राज्य के उत्तर-पूर्व में स्थित था।
- चंपा (वर्तमान में भागलपुर) राजधानी थी।
    - इसे राजा महागोविंद द्वारा स्थापित किया गया था।
    - इसे चेनांपो (ह्यून त्सांग द्वारा) तथा मालिनी भी कहा जाता था।

वज्जि राज्य

- इसमें आठ वंश निहित थे।
- सबसे महत्वपूर्ण वंश लिछावी, विदेहा तथा जनात्रिका थे।
- यह उत्तर भारत में स्थित था।
- वज्जि की राजधानी वैशाली में स्थित थी।
- इसे विश्व का पहला गणतंत्र माना जाता था।

लिछावी वंश

- यह वज्जि संधि में सबसे शक्तिशाली वंश था।
- यह गंगा तथा नेपाल के उत्तरी तटों पर स्थित था।
- इसकी राजधानी वैशाली में स्थित थी।
- भगवान महावीर का जन्म कुंदाग्राम, वैशाली में हुआ था। उनकी माता लिछावी की राजकुमारी थीं (राजा चेतक की बहन)।
- उन्हें बाद में हरयंका वंश के अजातशत्रु द्वारा मगध साम्राज्य में शामिल कर लिया गया था।
- बाद में गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त ने लिछावी की राजकुमारी कुमारादेवी से विवाह कर लिया।

जनात्रिका वंश

- भगवान महावीर इस वंश से संबंधित थे। उनके पिता इस वंश के प्रमुख थे।

विदेह वंश

- इसका उल्लेख पहली बार यजुर्वेद में किया गया है।
- इस राज्य की शुरूआत इश्कावाकु के पुत्र निमी विदेह द्वारा की गई थी।
- मिथिजनक विदेह ने मिथिला की स्थापना की।
- राजा जनक की पुत्री देवी सीता इस वंश से संबंधित थीं।
- जनकपुर (अब नेपाल में) इस राज्य की राजधानी थी।

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

मगध राज्य

- इसका उल्लेख पहली बार अथर्ववेद में किया गया है।
- यह उत्तर में गंगा से दक्षिण में विंध्यास तक, पूर्व में चंपा से पश्चिम में सोन नदी तक विस्तारित है।
- इसकी राजधानी गिरीवृज या राजगीर थी जो पांच पहाड़ों द्वारा सभी ओर से पहाड़ों से घिरी हुई थी।
- बाद में राजधानी को पाटलीपुत्र स्थानांतरित कर दिया गया था।
- मगध राज्य में कोशल, वत्स तथा अवंती शामिल थे।
- इसने बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- भारत के दो महान साम्राज्यों अर्थात् मौर्य और गुप्त का उदय मगध में हुआ।

मगध साम्राज्य से मौर्य पूर्व राजवंश

बृहधृथ राजवंश

- बृहधृत को पहले मगध के राजा के रूप में जाना जाता था। वह चेदि के कुरू राजा वासु के बड़े पुत्र थे।
- उनके नाम का उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है।
- बृहधृत का पुत्र जरासंध सबसे प्रसिद्ध राजा था।
- गिरीवृज (राजगीर) जरासंध के अधीन एक राजधानी थी।
- प्रोदयोता राजवंश मगध में बृहधृत राजवंश के उत्तराधिकारी थे।

हरयंका राजवंश - 544 ईसा पूर्व से 492 ईसा पूर्व

बिम्बिसार

- इन्होंने राजवंश की स्थापना की। यह बुद्ध के समकालीन थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी राजगीर में स्थापित की।
- इन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार वैवाहिक संबंधों के माध्यम से किया था जिसका उदाहरण कोशल राज्य है।
- वह स्थायी बलों / सेना बनाने के लिए इतिहास में पहला शासक भी था।
- इन्होंने अवंती के राजा चंद प्रदयोता और उनके लंबे समय तक प्रतिद्वंद्वी के उपचार हेतु शाही चिकित्सक जिवाका को उज्जैन भेजा, जो बाद में मित्र बन गए।

अजातशत्रु

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- इन्होंने अपने पिता बिंबिसार को अगला शासक बनने के लिए मार दिया।
- भगवान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया और भगवान महावीर ने भी अपने शासनकाल के दौरान मोक्ष प्राप्त किया।
- पहली बौद्ध परिषद (483 ईसा पूर्व) राजगीर में इनके संरक्षण के तहत आयोजित की गई थी।

उदायिन

- इसने भी अगला शासक बनने के लिए अपने पिता अजातशत्रु को मार दिया।
- इसने गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलीपुत्र शहर की स्थापना की और इसे अपनी राजधानी बनाया।

शिशुनाग राजवंश - 412 ईसा पूर्व से 344 ईसा पूर्व

शिशुनाग

- यह राजवंश के संस्थापक थे। यह बनारस के वायसराय थे।
- इस समय के दौरान मगध की दो राजधानियां अर्थात् राजगीर और वैशाली थीं।
- आखिरकार इन्होंने अवंती के प्रतिरोध को समाप्त करके 100 वर्ष की प्रतिद्वंद्विता को खत्म कर दिया।

कालाशोक

- इन्होंने अपनी राजधानी को पाटलीपुत्र स्थानांतरित किया और यह आगे मगध साम्राज्य की राजधानी के रूप में जारी रहा।
- वैशाली में दूसरी बौद्ध परिषद (383 ईसा पूर्व) का आयोजन इनके संरक्षण के तहत किया गया था।

नंद राजवंश - 344 ईसा पूर्व से 321 ईसा पूर्व

- महापदमानंद ने अंतिम शिशुनाग शासक नंदीवर्धन की हत्या के बाद राजवंश की स्थापना की।
- इन्हें महापदमापति एक अनंत मेजबान या विशाल संपत्ति के स्वामी के रूप में भी बताया गया था।
- महाबोधिंवाम्स में, इन्हें उग्रसेन कहा जाता था।
- धनानंद इस वंश के अंतिम शासक थे और अलेक्जेंडर के समकालीन थे।

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now